

अखिल भारतीय क्षत्रिय पोवार (पंवार) महासंघ :

परिचय, इतिहास एवं उद्देश्य

अखिल भारतीय क्षत्रिय पोवार (पंवार) महासंघ, मध्यभारत के प्राचीन छत्तीस कुलीन क्षत्रिय पोवार (पंवार/परमार) समाज का प्रतिनिधि एवं उत्तराधिकारी संगठन है, जो अपने पूर्ववर्ती सामाजिक संगठनों की गौरवशाली परंपरा, ऐतिहासिक विरासत तथा मूल उद्देश्यों को आगे बढ़ाने का कार्य कर रहा है।

मध्यभारत में क्षत्रिय पोवार (पंवार) समाज के आगमन को लगभग 325 वर्ष से अधिक समय व्यतीत हो चुका है। ऐतिहासिक परंपराओं एवं समाज में प्रचलित विवरणों के अनुसार नागरधन एवं उसके आसपास के क्षेत्रों में प्राचीन काल में भी हमारे पूर्वजों का प्रभाव एवं शासन रहा था। तत्पश्चात लगभग सन् 1700 के आसपास तत्कालीन क्षेत्रीय शासकों के आह्वान पर हमारे पूर्वज मुगल आक्रमणकारियों के विरुद्ध युद्ध करने हेतु मध्यभारत आए। युद्ध में विजय प्राप्त करने के उपरांत उन्हें भंडारा तथा आसपास के क्षेत्रों में किले, जागीरें, जमींदारियां, सैन्य वेतन, प्रशासनिक पद एवं भूमि प्रदान की गई। इसी कालखंड में नागपुर राज्य के विधिवत गठन एवं सुदृढीकरण में भी इन क्षत्रिय वीरों की महत्वपूर्ण भूमिका रही।



नागपुर के शासक राजा महिपत शाह उर्फ बुलंद शाह ने यहां आए क्षत्रिय सैन्यबल को स्थायी रूप से बसने के लिए प्रोत्साहित किया। फलस्वरूप अनेक परिवार अपने परिजनों सहित रामटेक, नागरधन, भंडारा तथा वैनगंगा नदी की घाटियों में आकर स्थायी रूप से बस गए। अपने पूर्वजों की संगठनात्मक परंपरा के अनुरूप इन क्षत्रियों ने एक सामूहिक संगठन की स्थापना की, जिसे "छत्तीस क्षत्रिय/राजपूत कुल संघ" अथवा "क्षत्रिय पोवार (पंवार) समाज" के नाम से जाना गया।

यह संगठन वास्तव में उन छत्तीस कुलीन प्राचीन क्षत्रिय कुलों का संघ था, जिन्हें विभिन्न ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक परंपराओं में वैदिक, पौर अथवा पौरव क्षत्रिय कहा गया है। इसी कारण संगठन एवं समाज की पहचान पोवार, पंवार अथवा परमार नामों से विकसित हुई।

मध्यभारत में बसने के पश्चात इस छत्तीस कुलीन संगठन ने समाज के सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक तथा संगठनात्मक जीवन को व्यवस्थित करने का महत्वपूर्ण कार्य किया।

बीसवीं शताब्दी के प्रारंभ में यही संगठन "पंवार जाति सुधारिणी सभा" के रूप में कार्यरत रहा। इस सभा में मुख्यतः उन्हीं स्वजातीय परिवारों के वंशज सम्मिलित थे, जो सर्वप्रथम रामटेक (नागरधन) एवं भंडारा क्षेत्र में आकर बसे थे और जिन्होंने वैनगंगा नदी की घाटियों में अपने स्थायी निवास स्थापित किए थे। इस संगठन ने समाज के विवाह संबंधी नियम, संस्कार, सामाजिक रीति-रिवाज, परंपराएं एवं विभिन्न विधि-विधानों का निर्माण एवं संहिताकरण किया, जिनका पालन आज भी समाज द्वारा किया जाता है।

पंवार जाति सुधारिणी सभा ने समाजोत्थान के क्षेत्र में अनेक ऐतिहासिक कार्य किए। इसके अंतर्गत पंवार राम मंदिर बैहर, पंवार शिक्षा समिति, महिला उत्थान समितियां तथा अनेक सामाजिक एवं शैक्षणिक संस्थाओं की स्थापना की गई। इन संस्थाओं के माध्यम से शिक्षा, सामाजिक जागरण, महिला सशक्तिकरण, सांस्कृतिक संरक्षण तथा संगठनात्मक विकास के कार्य निरंतर संचालित किए गए।

समय के साथ समाज की आवश्यकताओं के अनुरूप संगठन का पुनर्गठन भी होता रहा। सन् 1941 में इसे "मध्य प्रांत एवं बरार क्षत्रिय पंवार (पोवार) संघ" के रूप में संगठित किया गया। इसके पश्चात सन् 1961 में इसका विस्तार कर "अखिल भारतीय क्षत्रिय पंवार महासभा" का गठन किया गया, जिसने राष्ट्रीय स्तर पर समाज को संगठित करने का कार्य किया।

समाज की मूल ऐतिहासिक पहचान, छत्तीस कुलीन परंपरा, प्राचीन संगठनात्मक स्वरूप तथा पूर्ववर्ती संगठनों की विरासत को संरक्षित रखने के उद्देश्य से 9 जून 2020 को "अखिल भारतीय क्षत्रिय पोवार (पंवार) महासंघ" की स्थापना की गई। यह महासंघ स्वयं को पंवार जाति सुधारिणी सभा, मध्य प्रांत एवं बरार क्षत्रिय पंवार संघ तथा अखिल भारतीय क्षत्रिय पंवार महासभा की वैचारिक एवं ऐतिहासिक परंपरा का उत्तराधिकारी मानते हुए उनके मूल उद्देश्यों को आगे बढ़ा रहा है।

विशेष रूप से वर्ष 2007 के पश्चात समाज की संरचना, पहचान एवं संगठनात्मक स्वरूप से संबंधित उत्पन्न परिस्थितियों तथा अन्य जातियों को समाज में जोड़ने के प्रयासों के कारण समाज की मूल छत्तीस कुलीन पहचान, प्राचीन नाम एवं ऐतिहासिक स्वरूप के संरक्षण की आवश्यकता अनुभव की गई। इसी पृष्ठभूमि में महासंघ ने समाज के वास्तविक इतिहास, मूल सामाजिक संरचना, सांस्कृतिक धरोहर, भाषा एवं परंपराओं के संरक्षण तथा संवर्धन का दायित्व अपने ऊपर लिया।

महासंघ का प्रमुख उद्देश्य समाज के वास्तविक ऐतिहासिक अस्तित्व को सुरक्षित रखना, छत्तीस कुलीन सामाजिक पहचान का संरक्षण करना, पोवारी भाषा एवं संस्कृति का संवर्धन करना तथा समाज के सर्वांगीण विकास के लिए कार्य करना है। संगठन सामाजिक एकता, शिक्षा, सांस्कृतिक जागरण, इतिहास शोध, साहित्य सृजन तथा युवा पीढ़ी को अपनी गौरवशाली विरासत से जोड़ने के लिए निरंतर प्रयासरत है।

स्थापना के पश्चात पिछले छह वर्षों में महासंघ ने समाजहित में अनेक महत्वपूर्ण कार्य किए हैं। इसके द्वारा दो राष्ट्रीय अधिवेशन, छह राष्ट्रीय पोवारी साहित्य सम्मेलन तथा अनेक सामाजिक, सांस्कृतिक एवं बौद्धिक कार्यक्रम आयोजित किए गए हैं। संगठन द्वारा पोवारी भाषा एवं संस्कृति के संरक्षण के लिए साहित्य सृजन, इतिहास शोध, दस्तावेजीकरण, प्रकाशन तथा सांस्कृतिक कार्यक्रमों का सतत आयोजन किया जा रहा है। साथ ही समाज के उत्थान हेतु मार्गदर्शन कार्यक्रम, सामाजिक संवाद एवं संगठन सुदृढीकरण की गतिविधियां निरंतर संचालित की जा रही हैं।

वर्तमान में श्री मुन्नीलाल जी रहांगडाले के नेतृत्व में महासंघ अपनी समस्त इकाइयों, पदाधिकारियों एवं सदस्यों के सहयोग से समाजोत्थान के कार्यों को निरंतर आगे बढ़ा रहा है। संगठन का ध्येय है कि समाज की मूल छत्तीस कुलीन पहचान, भाषा, संस्कृति, इतिहास एवं परंपराएं सुरक्षित रहें तथा आने वाली पीढ़ियों में अपने समाज और सांस्कृतिक विरासत के प्रति वही समर्पण, गौरव और आत्मीयता विकसित हो, जो लगभग तीन शताब्दियों पूर्व हमारे पूर्वजों में थी।

अखिल भारतीय क्षत्रिय पोवार (पंवार) महासंघ अपने पूर्वजों द्वारा स्थापित संगठनात्मक परंपरा, सांस्कृतिक विरासत और सामाजिक मूल्यों के संरक्षण एवं संवर्धन हेतु समर्पित है तथा भविष्य में भी समाज, संस्कृति, इतिहास, भाषा एवं संगठन के सर्वांगीण विकास के लिए निरंतर कार्य करता रहेगा।

राजेश बिसेन,

जवाहर नगर, भंडारा

अखिल भारतीय क्षत्रिय पंवार(पोवार) महासंघ
